प्रभु शरणम्
BRAHMA KUMARIS
Brahma Kumaris, Subzone Seva Sankul
NADIAD

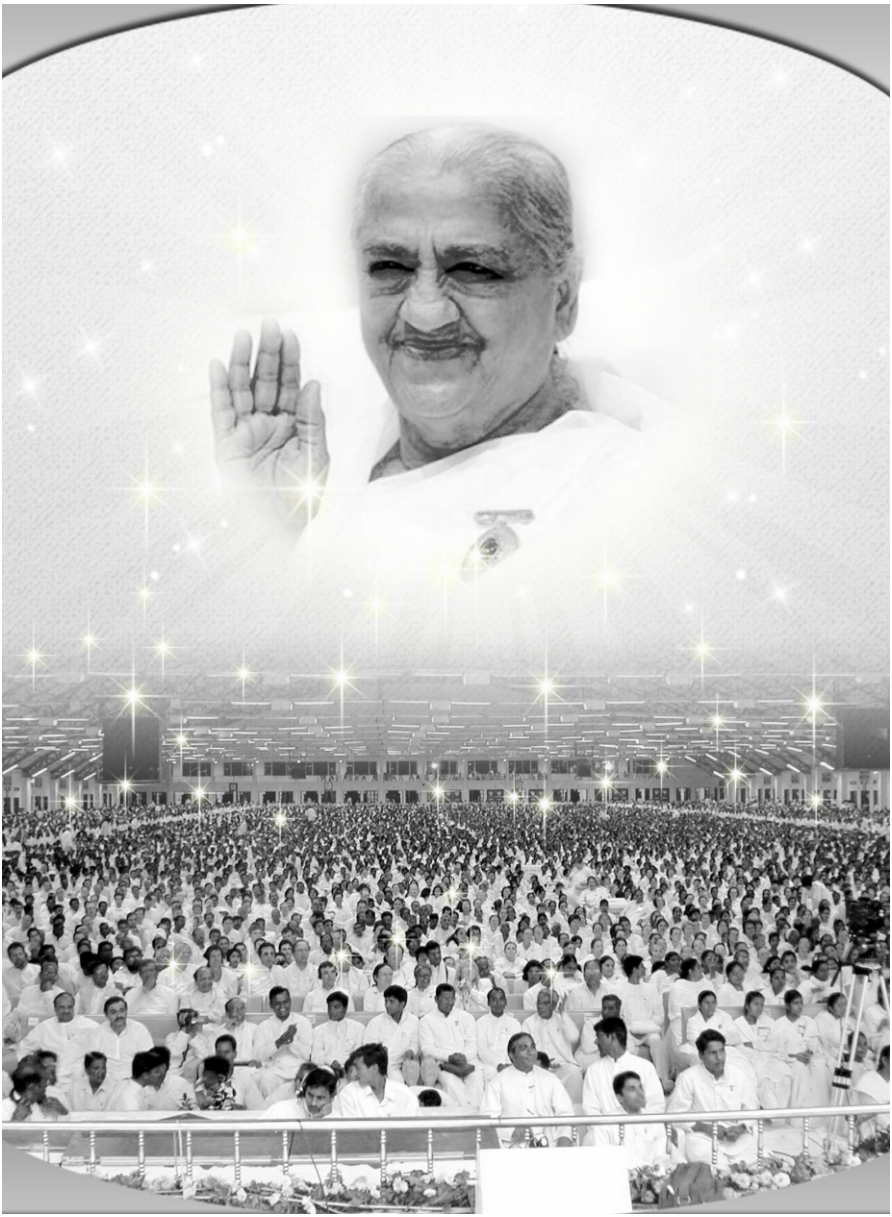

उपहार

अध्यात्म पथ के राही ब्रह्मावत्सों को समय की रफ्तार अनुसार, तीव्रगति से पुरुषार्थ करने के लिये बापदादा के बच्चों के प्रति अनमोल ज्ञान रत्न एवम् प्रेरणादायी महावाक्य मार्ग पथप्रदर्शक समान है तथा फरिश्ता स्वरूप स्थिति द्वारा मन्सा सेवा की ऊंची उडान के लिये उपयोगी है। यह प्रस्तुति इसी का संकलन है।

"प्रभु शरणम्" के शुभारंभ के उपलक्ष में

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी
ईश्वरीय विश्व विद्यालय
"प्रभु शरणम्"
सबझोन सेवा संकुल, नडीआद
फोन नं. 0268-2550280,2521280
nadiad@bkivv.org

प्रभु शरणम्

जब भी मानव विकट परिसिथिति या संकटों के घेराव में आ जाता है,और स्वयं को निःसहाय अनुभव करता है, तब वह मंदिर, मस्जिद, दोरा-धागा, मंत्र-तंत्र, गुरू-गोसाई आदि का सहारा ढूँढता है। आखरिन बचने का कोई चारा नहीं रहता तब अपनी रक्षा के लिये भगवान को पुकारता है।

भरी सभा में दुःशासन द्वारा चीरहरण होते आखिर द्रौपदी ने श्रीकृष्ण को पुकारा, महाभारत युद्ध के समय अर्जुन ने भी प्रभु की शरण ले विजय प्राप्त की। रामायण में सुग्रीव ने श्रीराम की सहायता से महाबलवान बाली पर जीत प्राप्त की। भगवान दयालु,कृपालु होने से उनकी मदद भी मिल जाने के कई दृष्टांत हम सुनते आये हैं।

वर्तमान समय में मानव आधि, व्याधि तथा उपाधि की चारों ओर की समस्याओं से त्रस्त, दुःखी और परेशान है। ऐसे समय में प्रभु की शरण ही सर्वोच्च है।

श्रीमद् भगवद् गीता में भगवानुवाच है, "जो मेरी शरण में आता है, मन-बुद्धि मुझे अर्पण करता है, उसकी मैं सर्व प्रकार से रक्षा करता हूँ। हे अर्जुन, तू मेरी शरण में आजा। (मामेकम् शरणम् व्रज) मुझे अपनी सर्व चिंता सौंप दे। मैं तुझे सर्व बंधनों से मुक्त कर दूंगा।"

प्रभु की शरण सर्वोच्च संरक्षण है। वर्तमान समय सिर्फ शरण की ही बात नहीं है। शरण में आना माना समर्पण होना है। जब प्रभु वा परमात्मा का सत्य परिचय प्राप्त हो जाता है तब आत्मा में समर्पण भाव पैदा होता है समर्पण होना माना अपने जीवन की बागडोर प्रभु के हवाले करना। अपनी सर्व इच्छायें, आकांक्षायें छोड कर प्रभु पिता को समर्पण अर्थात् उनकी श्रीमत अनुसार, उनकी राहों पर चलना। उनकी पनाहों में पलना और जो कुछ मेरा है- तन, मन, धन, संबंध, समय श्वास सब कुछ तेरा समझकर चलना और उनसे ही सर्व संबंधों का रस अनुभव करना। तब प्रभु की शरण प्राप्त हो जाने से वर्तमान जीवन में अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति हो जाती है और भविष्य जन्मोजन्म के लिये भाग्यवान बन जाते हैं।

प्रभु की खोज

सदियों से प्रभु की खोज करने के लिये मनुष्य आत्माओं ने क्या क्या नहीं किया? उसे ढूँढने के लिये वे मंदिर, मस्जिद, गिरजाघरों में गये। जंगलों, कंदराओं, पहाडों और तीर्थ स्थानों में भटके। गुरूओं के चरण छुए। जप-तप, मंत्र-माला, आरती-पूजा, व्रत-उपवास सब कुछ किया, पर वो कहीं नहीं मिला... क्यों?

क्योंकि उसने खुद भगवद् गीता में कहा है कि, "मेरा निवास स्थान इस धरती पर-साकार लोक में नहीं है। मैं कण-कण में सर्वत्र नहीं हूँ। इस धरती से खूब उंचे, चाँद, सितारे, सूरज और अंतरिक्ष से भी परे - परमब्रह्मतत्व - परमधाम या शांतिधाम का मैं निवासी हूँ। जब जब इस साकारी सृष्टि में कलियुग के अंतिम दौर में सुख-दुःख, अशांति, भ्रष्टाचार और आतंक के घने काले बादल छा जाते हैं और लोग त्राहि त्राहि पुकारते हैं - ऐसे धर्म ग्लानि के समय मैं इस धरती पर एक साधारण मनुष्य तन में अवतरित होता हूँ। मेरा परिचय मैं स्वयं ब्रह्मा मुख द्वारा देता हूँ और तुम आत्माओं की बुझी हुई ज्योत जगाता हूँ। तुम बच्चों को अपनी शरण में लेकर वापिस घर ले जाता हूँ और निकट भविष्य में आने वाली सतयुगी-देवी देवताओं की स्वर्णिम दुनिया के लिये लायक बनाता हूँ। फिर तुम वहाँ २१ जन्म पर्यन्त सुख-शांति, आनंद और पवित्रता का ईश्वरीय वर्सा प्राप्त करते हो।"

इसलिये तुम कहते हो- "उपरवाला जब मेहरबान होता है तो छप्पर फाड के देता है।"

मेरी शरण में आकर तुम कलियुग के सब संतापों से बच जाते हो। तुम्हारा नया जन्म सत्युगी देवभूमि भारत में श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के राज्य में होता है और तुम स्वर्ग की राजाई के अधिकारी बन जाते हो। इसलिये तुम गाते हो....

चरणों में जगह माँगी थी, हमें दिलमें बिठा दिया....

कभी अपने बच्चों को भिखारी के रूप में देख नहीं सकता

गहरी नदी को पार करने के लिये लकडी का एक छोटा-सा पुल था। बाप और उसकी छोटी बेटी को नदी पार करनी थी। बाप ने कहा, "बेटी तुम मेरा हाथ पकड लो पुल नाजुक है, गिर न जाओ।" बच्ची ने कहा, "पिताजी मेरा हाथ कोमल है और लकडी का पुल भी हिलता है, कहीं मुझसे आपका हाथ छूट न जाय। इसलिये आप ही मेरा हाथ पकड लो। मुझे विश्वास है आप मेरा हाथ कभी नहीं छोडेंगे.. "

बच्ची ने कितनी गहरी बात बता दी है ! हम परमात्मा को मात-पिता कहते हैं।संसार रूपी सागर को पार करने में हमें उस सुप्रीम बाप की ही मदद चाहिये। उसे कहो, "बाबा, आप ही मेरा हाथ थाम लो। मुझे भरोसा हैं - आप मेरा हाथ कभी छोडेंगें नहीं।" हमारी कमजोरियों के कारण ही हमारा हाथ छूट जाता है ! वह तब हाथ पकडेगा, जब हम हमारा जीवन उसके हाथों में देंगे ।

सृष्टि एक विराट रंगमंच है.....

जहाँ विविधता पूर्ण मनोरंजक नाटक चल रहा है। इसका आनंद लेने के लिये साक्षीभाव आवश्यक है। जब हम इस नाटक के पात्रों से तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं, तब वह संसार बन जाता है। इतना ही तो अंतर है - संसार और नाटक में। यह अंतर मूलतः दृष्टिकोण का है। तादात्म्य और आसक्ति (लगाव) की मनोवृत्ति होने पर संसार दुःखदायक, जटिल और जंजाल मालूम पडता है। लेकिन साक्षी तथा अनासक्ति (न्यारापन) की मनोवृत्ति होने पर नाटक आनंददायक है। अतः परिस्थिति को नहीं परंतु स्व-स्थिति को बदलने का पुरूषार्थ करना है। अनेकानेक आत्माओं के विविध पार्ट को देख सदा हर्षित रहना है। इसके विपरीत अगर तादात्म्य(तन्मयता) की मनोवृत्ति हो तो नाटक भी संसार जैसा-फँसानेवाला बन जाता है। नाटक के कल्पित पात्रों से तादात्म्य कर लेने के कारण कईं लोग थिएटर या सिनेमा होल में बैठ कर दुःख के आँसू बहाते हैं तथा भारी हृदय से बाहर निकलते हैं।

नाटक के पात्रों को तो सदा यह आंतरिक जागृति रहती है कि वह जो भी अभिनय कर रहा है, अपने जीवन से भिन्न है, एक खेल है। परिणाम स्वरूप वह पात्र के सुख-दुःख से न्यारा रहता है तथा अपने अभिनय का आनंद लेता है। वस्तुतः हम आत्मायें भी इस सृष्टि नाटक से परे मूलतः ब्रह्मलोक की निवासी - ज्योतिर्बिन्दु स्वरुप आत्मायें हैं। यथार्थ में हम इस विराट सृष्टि-रंगमंच पर भाँति-भाँति के चोले(शरीर) धारण कर विविधता पूर्ण हार-जीत का मनोरंजक खेल खेल रहे हैं। परमधाम से हम इस सृष्टिरूपी रंगमंच पर खेल का आनंद लेने आये हैं, न कि इसमें फँस कर दुःखी व अशांत होने के लिये। नाटक में हम शत्रु-मित्र, पति-पत्नी, पिता-पुत्र या अन्य कोई भी अभिनय कर सकते हैं लेकिन आत्मा रूप में हम सभी निराकार परमपिता परमात्मा-शिव की संतान हैं और आपस में भाई-भाई हैं। जब धरती पर उतरते हैं तब स्त्री या पुरूष का चोला मिलता है और परस्पर संबंध में आते हैं। अतः नाटक के अभिनय का कोई भी प्रभाव हम आत्मा की स्थिति पर नहीं पडना चाहिए। इस महान सत्य को भूल जाने से मनुष्य का जीवन कितना दुःखी, अशांत और कटुता पूर्ण हो गया है! सृष्टि एक विराट रंगमंच है।

चल उड़ जा रे पंछी, कि अब ये देश हुआ बेगाना....

बेहद के वैरागी बनो

अभी थोडे समय के बाद ही सारी पुरानी, पतित, भ्रष्टाचारी दुनिया का महाविनाश शुरू हो जायेगा। प्रकृति के पाँचों तत्वों का भारी प्रकोप होगा। तीसरा विश्व युद्ध होगा। करोंडों की संख्या में आत्मायें शरीर छोडेंगी। संपत्ति, साधन, अन्न, धन- कुछ भी काम में नहीं आयेगा। त्राहि-त्राहि होगी। जो तुम ईन आँखों से देखते हो, सब कुछ समाप्त हो जायेगा।

इसलिये संसार की जूठी बातों में अपना अमूल्य समय बरबाद नहीं करो। श्वासो- श्वास परमपिता शिवबाबा की याद में, लगन की अगन में मस्त रहो। "भगवान मेरे साथ है, मददगार है"। यही स्मृति विनाशज्वाला से न्यारा और प्यारा बनायेगी।

परिवर्तन का आधार - दृढ संकल्प

वह कौनसा एक दृढ संकल्प, जिस एक संकल्प से अनेक जन्मों की विस्मृति के संस्कार स्मृति में बदल जायँ? - "मैं आत्मा हूँ" - इस दृढ संकल्प से ही अपने में परिवर्तन लाया। ऐसे ही, दृढ संकल्प से विश्व को भी परिवर्तन में लाते हो वह एक दृढ संकल्प कौन सा?

"हम ही विश्व के आधार मूर्त, उद्धार मूर्त हैं अर्थात् विश्व कल्याणकारी हैं"। इस संकल्प को धारण करने से ही विश्व के परिवर्तन के कर्तव्य में सदा तत्पर रहते हो। अपने इस श्रेष्ठ मर्तबे और श्रेष्ठ कर्तव्य को सामने रखते हुए हर संकल्प वा हर कर्म करो तो कोई भी संकल्प वा कर्म व्यर्थ नहीं होगा।

स्मृति - विस्मृति का खेल

आज कल सायन्स द्वारा भी एक सेकन्ड में कोई भी वस्तु को भस्म कर लेते हैं, तो नोलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा एक सेकन्ड के दृढ संकल्प से वा प्रतिज्ञा से अपनी कमजोरियों को भस्म नहीं कर सकते हो?

बार-बार विस्मृति में आने से अपने आप को ही कमजोर बना देते हो, और छोटी-सी बात का भी सामना नहीं कर पाते हो। तो अब आधे कल्प के इन विस्मृति के संस्कारों को विदाई दो और आदि देवताई संस्कारों की स्मृति को इमर्ज करो।

अक के फूल

शिव परमात्मा की याद में अक के फूल चढते हैं, गुलाब के नहीं। अब व्यर्थ संकल्प रूपी अक का फूल अर्पण करो। व्यर्थ संकल्प जहाँ होगा वहाँ याद का संकल्प, ज्ञान के मधुर बोल, शुद्ध-सतोप्रधान संकल्प वा शुभ भावना स्मृति में नहीं रहेंगे। नियम अनुसार मुरली पढेंगे, सुनेंगे... परंतु मन में मनन-चिंतन नहीं चलेगा। सोचेंगे, कहेंगे- आज की मुरली बहुत अच्छी थी, वरदान भी बहुत अच्छा था... लेकिन याद आएगा... व्यर्थ।

व्यर्थ संकल्प मन-बुद्धि को अपने तरफ आकर्षित करनेवाले हैं। इस लास्ट जन्म के मूल्य के अनुसार व्यर्थ संकल्प अभी फिनिश होने चाहिये। चेक करो- एक घडी अगर व्यर्थ गई तो एक जन्म की बात नहीं, 21 जन्म के व्यर्थ समय और संबंध की बात है अगर आपका समय और संकल्प बच गया, समर्थ हो गया तो आपका दिन सदा खुशनसीब और खुशनमाः बन जायेगा।

स्वयं को रियलाईझ् करो

चलते फिरते, कर्म करते आत्म स्वरूप की मेहसूसता रहती है? पुराने संस्कार समाप्त हुए हैं या नहीं? युग परिवर्तन का समय चल रहा है, प्रकृति में भी परिवर्तन दिखाई देता है। स्वयं में परिवर्तन दिखाई देता है -खुद को, दूसरों को भी?

अभी रियलाईझेशन का समय है जो बाप चाहता है वह मैं कर रहा हूँ? संबंध-संपर्क में भी रियलाईझ् करो। सर्व प्रति शुभभावना है? वैर-विरोध, अनबन, लगाव, तनाव, फरियाद और चाहिये-चाहिये की चाह अभी भी इमर्ज है या मर्ज हो गयी है? वापिस घर चलने की तैयारी हो गई है - या बाकी रही हुई है? "नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप"। की मंजिल कितनी दूर है?

अंतिम यात्रा की तैयारी करने का थोडा ही समय बाकी रहा हुआ है। अलबेलापन, व्यर्थ संकल्प, बोल और कर्म तथा माया सूक्ष्म रूप में आकर धोखा न देवे। ऐसे अलर्ट रहो। अब ये दुनिया मेरे काम की ही नहीं। यही भाव दृढ रहे। अपने हर संकल्प, समय, श्वास, बोल और कर्म सफल कर लो।

संगमयुगी प्रारब्ध

सारे दिन में एकरस स्थिति के बजाय और रस आकर्षित तो नहीं करते हैं? एकरस, नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप हो गये? सभी स्मृति स्वरुप होना- यह है ज्ञान की प्रारब्ध। जो वर्णन करते हो स्व स्वरूप का, वह सर्व गुण सदा अनुभव रहते हैं ना?

एकरस अर्थात् एक ही सम्पन्न मूड में रहने वाला। मूड कभी बदली न हो। बापदादा वतन से देखते हैं, कई बच्चों के मूड बहुत बदलते हैं। कभी आश्चर्यवत्

की मूड, कभी क्वेश्चन मार्क, कभी कन्फ्यूज, कभी टेन्शन, कभी उदासी। बार-बार पुरुषार्थ कहाँ तक करते रहेंगे? बाप की मूड ओफ होती है क्या?

जब चाहो, आनंद स्वरूप के झूले में झूलो, जब चाहो प्रेम स्वरूप हो जाओ, जब चाहो शांति के सागर तले जाकर ज्ञान-रत्न ढूंढ लाओ। जो बाप के गुण वही बच्चों के गुण। जो बाप का कर्तव्य वह बच्चों का कर्तव्य। जो बाप की स्टेज वह बच्चों की स्टेज(बिन्दी)।

इसको कहा जाता है, संगमयुगी प्रारब्ध।

ब्राह्मण अर्थात् तपस्वीमूर्त

आप की तपस्या का यादगार शास्त्रों में शंकर का रूप दिखाया है। शंकर अर्थात् अशरीरी-तरस्वीमूर्त। सदा ऊंची स्थिति और ऊंचे आसनधारी- साधना करनेवाले। विकारों रूपी सांप को गले का हार बना दिया। तिसरी आँख संपूर्णता और संपन्नता की है। नटराज हो कर डान्स करना अर्थात् संपन्न स्थिति द्वारा विश्व परिवर्तन का संकल्प करना। तब प्रकृति भी हलचल- विनाश का डान्स करेगी।

ऐसी तपस्या का पावरफुल वायुमंडल बनाने के लिये सर्व का एक ही संकल्प, एक ही समय पर उत्पन्न हो- "परिवर्तन.. परिवर्तन.. परिवर्तन।"

परंतु प्रकृति आपका ऑर्डर तब मानेगी जब आपकी सहयोगी कर्मेन्द्रियाँ, मन-बुद्धि और संस्कार ऑर्डर मानेगी।

तपस्या का फाउन्डेशन है - बेहद का वैराग्य अर्थात् चारों और के किनारों को छोडना। न्यारा बनना ही किनारे(लगाव, प्रभाव, मैं-मेरापन) छोडना है।

ब्राह्मण अर्थात् बाप से मिलन की मौज। प्राप्तियों की खुशी। बाप की समीपता और छत्रछाया का अनुभव। अपनी शान में रहनेवाला- परेशानियों से मुक्त- बेफिकर बादशाह।

अपने से पूछो, मैं कौन - ब्राह्मण या क्षत्रीय?

पुरुषार्थी अर्थात् इस प्रकृति का मालिक। देहरूपी रथ और इन्द्रिय रूपी अश्व का रथी। एक ही शब्द के अर्थस्वरूप में स्थित हो जाओ तो सर्व कमजोरियों से सहज पार हो जायेंगे। पुरूष प्रकृति के अधिकारी है, अधीन नहीं। रथी रथ को चलानेवाला है, न कि रथ के अधीन हो चलनेवाला। सर्व शक्तियाँ बाप की प्रापर्टी है और प्रोपर्टी का अधिकारी हर एक बच्चा है।

फिर स्वयं ही राजा के बदले अधीन प्रजा बन जाते हो। ऐसा खेल क्यों करते हो? अगर ऐसा ही खेल करते रहेंगे तो सदा के राज्य भाग्य के अधिकार के संस्कार अविनाशी कब बनेंगे? अगर इसी खेल में चलते रहे तो प्राप्ति क्या होगी? जो अपने आदि संस्कार अविनाशी नहीं बना सकते वे आदि काल के राज्य अधिकारी कैसे बनेंगे?

अगर बहुत काल के योद्धेपन के संस्कार रहे अर्थात् युद्ध करते-करते समय बिताया, आज जीत कल हार। अभी अभी जीत, अभी अभी हार। सदा के विजयीपन के संस्कार नहीं तो क्षत्रीय कहा जायेगा वा ब्राह्मण? ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। क्षत्रीय तो फिर क्षत्रीय ही जाकर बनेगा। देवता की और क्षत्रीय की निशानी में देखो, अंतर है। यादगार चित्रों में क्षत्रीय (श्रीराम) को कमान और देवता(श्रीकृष्ण) को मूरली दिखाई है। मास्टर मूरलीधर बन विकारों रूपी सांप का विष समाप्त कर शैया बना दी। कहाँ विषवाला सांप कहाँ शैया! इतना परिवर्तन किससे किया? - मूरली से। ऐसे परिवर्तन वाले को ही विजयी ब्राह्मण कहा जाता हैं। तो अपने से पूछो - मैं कौन?

बंधनमुक्त होने की तैयारी

ब्रह्माबाप को अब किस बात का इंतजार है? (उद्घाटन का) उद्घाटन के लिये क्या तैयारी करते हो? उद्घाटन से पहले रिबन बांधते हो, फूलों को बांधते हो, कैंची से कांटते हो। कैंची रखते कहाँ हो? फूलों से सजी थाली के अंदर। इससे क्या सिद्ध होता है? बंधन मुक्त होने के पहले स्वयं को गुणरूपी फूलों से संपन्न

करना है। तो स्वतः ही बंधनमुक्त हो ही जायेंगे। एक तरफ स्वयं को संपन्न बनाना लेकिन संपन्न बनने के पहले बाह्यमुखता के बंधनों से मुक्त होना है।

बाह्यमुखता क्या है? व्यक्त भाव, व्यक्ति के भाव-स्वभाव और व्यक्त भाव के वायब्रेशन, संकल्प, बोल, संबंध-संपर्क द्वारा एक-दो को व्यर्थ की ओर उकसाने वाले, सदा अल्प काल के मुख के लड्डु खाने और ओरों को भी खिलाने वाले सदा किसी न किसी बाह्य विचार और व्यर्थ बातों में रहने वाले। आंतरिक सुख,शांति, खुशी और शक्ति से सदा वंचित रहने वालों को ही बहिर्मुखी कहा जायेगा। बहिर्मुखी सदा बाप की छत्रछाया की सुरक्षा से वंचित रहते हैं। इसलिये "अंतर्मुखी सदा सुखी" का गायन गाया जाता है।

विशेष तीव्रगति की तैयारी

अब समय ऐसा आ रहा है, जो आप होली सितारों को देखने के लिये सभी उत्सुक होंगे। ढूंढेंगे आप सितारों को कि यह शांति का प्रभाव, सुख का प्रभाव, अचल बनने का प्रभाव कहाँ से आ रहा है? यह भी रिसर्च करेंगे। अभी तो प्रकृति की खोज तरफ लगे हुए हैं। जब सायन्स के खोज से थक जायेंगे तो यह रूहानी रिसर्च करने का संकल्प आयेगा। उसके पहले आप स्वयं को संपन्न बना लो। कम से कम एक गुण की विशेषता अपने में भरने की तैयारी करो। हर गुण की, शक्ति की रिसर्च करो और महिनता में जाओ। महिनता से उस गुण की महानता का अनुभव कर सकेंगे। याद की विभिन्न स्टेजीस् का, पुरुषार्थ की स्टेजीस् का महिनता से रिसर्च करो। गुह्यता में जाओ और गहन अनुभूतियाँ करो।

हर गुण या शक्ति के फायदे, स्थिति बनाने में मदद, उससे सेवा में सफलता, कितने परसेन्टेज् में वह गुण या शक्ति प्राप्त की है- उसका प्रयोग करें। जैसे कि धैर्य, प्रसन्नता, पवित्रता, मधुरता, क्षमाभाव, परख शक्ति, सहनशक्ति, निर्णय शक्ति-इत्यादि में कितना संपन्न बने हो? कहाँ पर विघ्न या माया आयी और हार खानी पडी? अटेन्शन और अंतर्मुखता के शस्त्र और दृढता की शक्ति धारण कर तीव्र वेग से हाईजम्प देने का पुरूषार्थ करें।

बाप के तीन रूप और तीनों से प्राप्तियाँ

बाप ने हर एक अपनी श्रेष्ठ रचना को विशेष तीनों संबंध से कितना संपन्न बनाया है!

१. बाप के संबंध से दाता बन ज्ञान, गुण और शक्तियों के खजानों से भरपूर कर दिया।

२. शिक्षक रूप से भाग्यविधाता बन अनेक जन्मों के लिये भाग्यवान बनाया।

३. सत्गुरू के रूप में वरदाता बन वरदानों से झोली भर देते हैं।

यह है अविनाशी स्नेह का प्यार। जिससे प्यार होता है, उसकी कमी अच्छी नहीं लगेगी। कमी को कमाल रूप में परिवर्तन करेंगे। बाप को बच्चों की कमी कमाल के रूप में परिवर्तन करने का सदा शुभ संकल्प रहता है। प्यार में बाप को बच्चों की मेहनत देखी नहीं जाती। दाता, विधाता और वरदाता - तीनों संबंध से इतने संपन्न बन जाते हो जो बिना मेहनत रूहानी मौज में रह सकते हो। वर्सा भी है, पढाई भी है और वरदान भी है।

वर्से के रूप में बाप को याद करो तो रूहानी अधिकारीपन का नशा रहेगा। शिक्षक के रूप में याद करो तो गोडली स्टुडन्ट के भाग्य का नशा रहेगा। सत्गुरू हर कदम वरदानों से चला रहा है। सत्गुरू की मत श्रेष्ठ गति-सदगति को प्राप्त कराती है।

ब्रह्माबाप ने समय को शिक्षक नही बनाया.....

कई बच्चे कहते हैं, समय सिखा देगा, समय बदल देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी, लेकिन आप बच्चे समय का इंतजार नहीं करो। समय को शिक्षक नहीं बनाओ। ब्रह्माबाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया। बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा।

आदि में देखो, इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा। सदा नेचरल बोल यही रहा- मेरा शरीर नहीं, बाबा का रथ है।

तन से भी वैराग्य, मन तो मनमनाभव(शिवबाबा की शरण में) था ही। धन को मेरा समजकर पर्सनल अपने प्रति एक रूपिये की भी चीज यूज नहीं की। भोलेनाथ का भण्डारा है। कन्याओं, माताओं के नाम विल किया। मेरापन मिटा दिया। समय, संबंध, श्वास अपने प्रति नहीं- बेहद के वैरागी रहे। एक ही प्रकार के वस्त्र अंत तक रहे। मकान भी बच्चों के लिये बनायें, स्वयं यूज नहीं किया। कोई भी स्पेशियल चीज अपने लिये नहीं रखी। सदा उपराम रहे। अंतिम क्षण देखो, बच्चे सामने हैं, हाथ पकड़ा हुआ है लेकिन लगाव रहा? इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृत्ति।

अभी समय प्रमाण बेहद की वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद की वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। फोलो फादर।

समय की रफ्तार तेज है, पुरूषार्थ की रफ्तार कम है। बच्चे सूक्ष्म लगाव में बंध जाते हैं। अनेक प्रकार के लगाव बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं। चेक करो- अपने सूक्ष्म लगावों को।

बापदादा बच्चों के गीत सुनते हैं, हम उडते चले जायें.... लेकिन लगाव उडने देंगे? सम्पूर्णता के दर्पण में लगाव को चेक करो और चेन्ज हो जाओ। छोडो सब किनारे.... बन्धनमुक्त होकर उडते चले आओ।

सावधान - ॲलर्ट - एवररेडी

ऐसे नहीं सोचना कि, अभी कुछ समय तो पड़ा है। विनाश होना है अचानक। इसके पहले माया अपना जादू फैलायेगी, अलबेला बनायेगी। किसी भी बात में, चाहे सेवा में, योग में, धारणा में, संबंध-संपर्क में - यह तो चलता ही है, यह तो होता ही है...ऐसे माया अलबेला बनाने की कोशिश करेगी। शस्त्र और शक्ति से अकेला बनाकर सूक्ष्म रूप से बुद्धि पर वार करेगी। फिर अचानक विनाश होगा।

इसलिये चारों ही सबजेक्ट्स में ॲलर्ट रहो। अभी भी कुछ हो जाये तो एवररेडी। पेपर के समय टीचर या प्रिन्सिपाल (धर्मराज) मदद नहीं करता। अभी जितनी शक्ति चाहिये उतनी जमा कर लो। सबको खुल्ली छुट्टी है, खुला भंडार है। विनाश के समय बापदादा मदद नहीं करेंगे। हाहाकार के समय पश्चात्ताप की लाईन में खडे हो कर लहू के आँसू बहाना न पडे; इसलिये सावधान, ॲलर्ट, एवररेडी।

रोयल आत्मा की पहचान

१. मन सदा भरपूर रहेगा, चाहे स्थूल वस्तु या साधन नहीं भी हो।

२. मांगने का अंशमात्र भी संस्कार नहीं होगा। स्व की हद की प्राप्ति के संस्कार - नाम, मान, शान चाहिए, पालना चाहिए, प्यार चाहिए, पूछना चाहिए- इन सब हद की बातों से मुक्त। बेहद की सेवा के प्रति सोच, और बाप समान बनने की लगन।

३. जितना प्यारा, उतना ही न्यारा होगा। न किसीसे लगाव, न किसीका प्रभाव। न कोई टेन्शन, न किसी व्यक्ति, वस्तु या मत का आकर्षण। न स्वयं एक्स्ट्रा एटेचमेन्ट में आयेगा, न दूसरों को लायेगा। रूहानी एट्रेक्शन से सबका प्यारा होगा।

४. सदा प्रसन्न, तृप्त और लाइट(हल्कापन) की स्थिति में होगा। सदा संपन्न, निर्विघ्न और संतुष्ट रहेगा। उडती कला(फरिश्ता स्वरूप) का अनुभव स्वयं को और संपर्कवालों को भी होगा। उत्साह-उमंग, स्नेह और खुशी के झूलों में झूलता रहेगा।

५. इमानदार, वफादार, परोपकारी और सदा सहयोगी होगा। असंतुष्ट करनेवाले को भी रहमदिल बन, शुभ भावना का सहयोग देगा। बदला लेने के बजाय स्वयं बदलकर उदाहरण मूर्त बनेगा। स्वयं में परिवर्तन कर दिव्य गुणों द्वारा बापदादा को प्रत्यक्ष करेगा।

६. मुख से कभी कटु, व्यर्थ वा साधारण बोल नहीं निकलेंगे। सदा ज्ञान-रत्नों की लेनदेन करेगा। व्यक्तभाव वा साधारण से परे अव्यक्त, अलौकिक वा रूहानी भाव, भावना और चलन होंगे।

इस समय की रोयल्टी(श्रेष्ठता) भविष्य की रोयल फेमिली में आने के अधिकारी बनाती है।

संपूर्णता अर्थात् स्थितप्रज्ञता

- निंदा-स्तुति, जय-पराजय, सुख-दुःख, लाभ-हानि... सभी परिस्थिति में समानता, बेलेन्स की स्थिति रहे।
- सर्वस्व त्यागी। ईच्छा मात्रम् अविद्या- सर्व संकल्पों के त्यागी। संपूर्णता अर्थात् समर्थ संकल्प, निर्मल वाणी, निमित्त भाव, व्यर्थ संकल्प-बोल और व्यर्थ समय के त्यागी।
- संपूर्ण आत्मा वह जिसने सर्व समर्पण किया हुआ हो। मैं पन और मेरापन मिट चुका हो। निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी स्थिति का अभ्यास हो।
- सर्व शक्तियाँ और सर्व गुणों से भरपूर। १६ कला संपूर्ण। हर कर्म, हर चलन, हर बोल कला के रूप में और महिमा योग्य हो।
- संपूर्ण माना एवररेडी। सदा कम्बाइन्ड स्वरूप- फरिश्ता- डबल लाइट स्थिति से संपन्न। बाप के साथ और समीप रहने का स्वतः सहज अनुभव हो।
- दातापन के संस्कार हर घडी ईमर्ज रहे। जो भरपूर होता है वो सदा देता ही रहता है; लेता नहीं। कैसी भी परिस्थिति, बात या व्यक्ति हो- नथिंग न्यू समजकर स्वीकार करेगा, क्षमा करेगा।
- सर्व प्रति शुभ भाव-भावना, कल्याण की वृत्ति, रहम की दृष्टि तथा सन्मान देते ही रहने से डबल लाइट बन सकेंगे।
- अभी ज्ञान, सन्मान, गुण, शक्ति, समय, सेवा, सकाश देने का समय चल रहा है। जो संपूर्ण-संपन्न होता है वही दे सकता है।

संपन्न बनने में आने वाली बाधायें

१. ज्ञान में अच्छी तरह चलते हो, सिर्फ पुराने स्वभाव-संस्कार की टक्कर खाते हो। अपना कमजोर स्वभाव, नये ब्राह्मण जीवन में कभी-कभी इमर्ज हो जाता हैं। यही है संस्कार मिलन का रास न होने का कारण।

२. सहनशक्ति और समाने की शक्ति की आवश्यकता है। यह कमी फूल पास के समीप लाने नहीं देती।

३. मन की चंचलता पर कन्ट्रोलींग और रूलींग पावर न होने के कारण योग में बैठते हो तब मन जहाँ-तहाँ व्यर्थ बातों में भटकता रहता है। एकरस स्थिति का आनंद लेने से वंचित रह जाते हो।

४. आलस्य और अलबेलापन-ब्राह्मण जीवन के दो दुश्मन हैं। मुख्य पांच विकारों को वश कर लेने के बाद भी ये दोनों कभी-कभी संपन्न और संपूर्ण बनने में रूकावट डालते हैं। यह सोच लेते हैं कि, अभी तो विनाश होने में देरी है, अभी तक कौन संपूर्ण बन गया है? अन्त तक तो तैयार हो ही जायेंगे। हर एक में कमी दिखाई देती है। संपूर्ण बनाना और घर ले जाने का काम तो बाबा का है। हमें नहीं तो और किसको सत्युग में भेजेगा?

अनुभव स्वरूप बनो

जैसे शरीर की शक्ति के लिये सबसे ज्यादा पाचन करने की शक्ति अर्थात् हजम करने की शक्ति आवश्यक है; वैसे आत्मा को शक्तिशाली बनाने के लिये मनन शक्ति आवश्यक है। मनन शक्ति से बाप द्वारा सुना हुआ ज्ञान स्वयं का अनुभव बन जाता है।

जैसे पहली पोईंट "मैं आत्मा हूँ"- मनन शक्ति द्वारा स्मृति स्वरूप बन जाने से समर्थी आ जाती है। " मैं हूँ ही मालिक " - यह स्मृति अनुभवी और समर्थ स्वरूप बना देती है। इसी प्रकार ड्रामा की पोईंट - केवल कहने, सुनने से नहीं लेकिन चलते-फिरते स्वयं को हीरो पार्टधारी अनुभव करते हो तो मनन शक्ति द्वारा अनुभव स्वरूप हो जाते हो। यह बडे ते बडी शक्ति है।

अनुभवी के लक्षण :-

१. अनुभवी कभी धोखा नहीं खा सकते।

२. किसी के हिलाने से वा सुनी-सुनायी बातों से विचलित नहीं हो सकते।

३. अनुभवी का बोल हजार शब्दों से भी ज्यादा मूल्यवान होता है।

४. वे सदा अनुभवों के खजानों से संपन्न, संतुष्ट और प्रसन्न रहते हैं।

५. ऐसे मनन शक्ति द्वारा ज्ञान के हर पोईंट के अनुभवी सदा शक्तिशाली, मायाप्रुफ, विघ्नप्रुफ और सदा अंगद के समान अचल होता है।

तो समजा, अभी क्या करना है?

पहला पाठ पक्का करो

बापदादा देख रहे थे कि अभी तक जब कि अपने संस्कारों को परिवर्तन करने की शक्ति नहीं आयी है, तो विश्व परिवर्तक कब बनेंगे? अभी दृष्टि परिवर्तन, वृत्ति परिवर्तन, यह अविनाशी कब तक करेंगे?

आप दृष्टा, दृष्टि द्वारा देखनेवाले दृष्टा। दृष्टि क्यों विचलित करते? दिव्यनेत्र से देखते हो वा इस चमडी के नेत्रों से देखते हो? दिव्यनेत्रों से सदा स्वतः दिव्य स्वरूप ही दिखाई देगा। चमडी की आँखें चमडे को देखती। चमडी को देखना, चमडी का सोचना यह किसका काम हैं? फरिश्तों का? ब्राह्मणों का? स्वराज्य अधिकारीयों का? तो ब्राह्मण हो या कौन हो? नाम बोले क्या?

सदैव हर एक नारी के शरीरधारी आत्मा को शक्तिरूप, जगत्माता का रूप, देवी का रूप देखना। यह है दिव्यनेत्र से देखना। लंका को जलानेवाले पहले स्वयं के अंदर रावण वंश को जलाना है।

किसी भी देहधारी को देख सदा मस्तक के तरफ आत्मा को देखो। बात आत्मा से करनी है वा शरीर से? कार्य व्यवहार में आत्मा कार्य करता है वा शरीर? सदा हर सेकंड शरीर में आत्मा को देखो। नजर ही मस्तक मणि पर जानी चाहिये। तो क्या होगा? स्वतः ही आत्मअभिमानी बन जायेंगे। पहला पाठ - अल्फ ही पक्का नहीं करेंगे तो बे की बादशाही कैसे मिलेगी? सिर्फ एक बात की सदा सावधानी रखो। जो भी कर्म करना है- श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ परिवर्तन करना ही है। हर बात में दृढ संकल्पवाले बनो।

आप समान बनो तो पर्दा खुल जाय

ब्राह्मणों के जीवन में संपूर्ण सुख-शांति की अनुभूति न हो वा ब्राह्मण सर्व प्राप्तियों से संपन्न न हो तो सिवाय ब्राह्मणों के और कौन होगा? और कोई हो सकता है? ब्राह्मण ही हो सकते हैं ना?

आप ब्राह्मण जितने संपन्न बनते जायेंगे उतना भविष्य में प्रकृति भी प्रगति को प्राप्त करेगी। अभी तो प्रकृति समय प्रति समय अपना सिग्नल (संकेत) दिखा रही है। जितनी प्रकृति की हलचल उतनी आपकी अचल स्थिति प्रकृति को परिवर्तन करेगी। कितनी आत्मायें समय प्रति समय दुःख की लहर में आती हैं! ऐसे दुःखी आत्माओं का सहारा तो बाप और आप ही हो ना? तो रहम पडता है ना? (या नथिंग न्यू करके साक्षी बन जाते हो?) दुःखी होकर जब आत्मायें चिल्लाती हैं तो किसको पुकारती हैं? जब मर्सी या रहम मांगते हैं तो आप लोगों को उनकी पुकार सुनाई तो देती हैं ना? आप सभी ब्राह्मण संपन्न हो जाओ तो दुःख की दुनिया भी संपन्न हो जायेगी।

महाविनाश अर्थात् महान परिवर्तन। उसके निमित्त आप हो आप संपन्न बनेंगे तो समाप्ति होगी। कई बच्चे चाहते हैं कि जल्दी प्रत्यक्षता का पर्दा खुल जाये लेकिन स्टेज पर आनेवाले हीरो एक्टर तैयार होने चाहिए ना!

अशरीरी बनने की सहज विधि

(बाप-दादा की आपस में रूहरूहान)

बाप बोले - अशरीरी आत्मा को अशरीरी बनने में मेहनत क्यों?

ब्रह्मा बाप बोले-८४ जन्म चोला धारण कर पार्ट बजाते बजाते शरीरधारी बन जाते हैं।

शिवबाप बोले - पार्ट बजाया, लेकिन अब समय कौन सा है? अब पार्ट समाप्त कर घर जाना है, इसलिये पार्ट की ड्रेस तो छोडनी पडेगी ना? घर जाना है

तो यह पुराना ड्रेस छोडना पडेगा। राज्य में अर्थात् स्वर्ग में जाना है तो भी यह पुरानी-मैली ड्रेस छोडनी पडेगी। जब जाना ही है तो भूलना मुश्किल क्यों? आप सभी जाने के लिये एवररेडी हो ना? कि अब भी कुछ रस्सियाँ बंधी हुई हैं?

अशरीरी बनने के लिये विशेष चार बातों का अटेन्शन रखो।

१. प्रीत- एक सच्ची प्रीत दुनिया और देह को भुलाने का साधन है। सिर्फ प्रीत के गीत में ही खो जाते हैं तो सोचो प्रीत निभानेवाले कितना खोये हुए होंगे? जहाँ प्रभु प्रीत है वहाँ अशरीरी बनना सेकन्ड के खेल के समान है।

२. मीत - अगर दो मीत आपस में मिल जायें तो उन्हें न स्वयं की, न समय की स्मृति रहती है। शरीरधारी मीत तो स्मशान तक ही जायेंगे। वे दुःखहर्ता, सुखकर्ता नहीं बन सकेंगे। अब सच्चा मीत मिल गया है ना? सदा इसी अविनाशी मीत के साथ रहो तो महोब्बत में मेहनत खतम हो जायेगी।

३. गीत - अगर दिल से कोई गीत गाते हैं तो उस समय के लिये वह स्वयं और समय को भुला हुआ होता है। ऐसे ही बापदादा द्वारा प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों के, महिमा के, गुणों के गीत गाते रहो। " एक तू जो मिला सारी दुनिया मिली...."

४. रीत - यथार्थ रीत सेकन्ड की रीत है। "मैं अशरीरी आत्मा सर्वशक्तिवान बाप की संतान हूँ"। यह सबसे यथार्थ रीत है।

तीव्र पुरुषार्थ की निशानियाँ

१. जो तीव्र पुरुषार्थी हैं उनके मुख से "कभी" शब्द न निकलेगा । वह सदैव "अभी," कहने में नहीं, लेकिन अभी अभी करके दिखायेंगे।

२. दिनप्रतिदिन जो शिक्षा मिलती हैं, उसको स्वरूप में लायेंगे। ज्ञानस्वरूप, प्रेमस्वरूप, शक्तिस्वरूप, आनंदस्वरूप स्थिति सदा रहे। ज्ञान को पोइन्ट्स की रीति से बुद्धि में ही नहीं रखेंगे लेकिन पोइन्ट्स को प्रेक्टिकल स्वरूप में लायेंगे । स्वरूप में लानेसे ही साक्षात्कारमूर्त बन जायेंगे।

३. मुख्य फरमान कौनसा है ? "पवित्र बनो, योगी बनो।" निरंतर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म में प्युरीटी हो। संकल्प में भी अशुद्धता न हो। अभी वापिस घर जाने की तैयारी करनी है-यह धुन लगी रहे। माया को बिदाई देने की स्टेज होनी चाहिये।

४. संपूर्ण वफादार वे कहेलायेंगे जिन्हें संकल्प में भी वा स्वप्न में भी सिवाय बाप के ज्ञान, कर्तव्य या महिमा के और कुछ भी दिखाई न दे। "एक बाप दूसरा न कोई"। यह धून सदैव चलती रहे।

५. फरमानबरदार बच्चों की परख क्या होगी? सच्चाई और सफाई। संकल्प तक सच्चाई और सफाई चाहिये, न सिर्फ वाणी तक।

६. "और संग तोड एक संग जोडेंगे"। यह पहला पहला वायदा निभाने में सदा तत्पर रहेंगे।

अव्यक्त और अंतर्मुख स्थिति के लिये शिक्षा

...अच्छा, एक बात और भी धारण होनी चाहिये। यह है कि जैसे अब समय नजदीक है, तो समय के अनुसार अंतर्मुखता की अवस्था अर्थात् वाणी से परे, अंतर्मुख होकर, अव्यक्त स्थिति में टिक कर कर्म करने की अवस्था दिखाई देनी चाहिये। वह कुछ अभी भी कम हैं। अवस्था ऐसी होनी चाहिये कि कारोबार भी चले और कर्मातीत स्थिति अथवा अव्यक्त स्थिति भी बनी रहे। यह दोनों ही इकट्ठी संपन्न रूप में रहे; परंतु अभी इस बात की कमी है। अब साकार तो अव्यक्त स्वरूप में स्थित है परंतु आप वत्स भी अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे तो उनसे अव्यक्त मुलाकात का अलौकिक अनुभव प्राप्त कर सकेंगे।

अव्यक्त अवस्था को प्राप्त करने की युक्तियाँ

शिवबाबा बोले - अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त को व्यक्त में देखो।

वत्सों से प्रश्न : क्या आप सर्व समर्पण बने हैं?

एक वत्स ने उत्तर दिया : हम तो सर्व समर्पण हैं ही।

बाबा बोले : यही सभी का विचार है या और किसी का कुछ और विचार है?

दूसरे वत्स ने कहा : जैसे ब्रह्मा बाबा सर्व समर्पण थे वैसे हम नहीं बने हैं।

बाबा बोले : सर्व समर्पण किसको कहा जाता है? सर्व में यह "देह का भान" भी तो शामिल है। तो क्या देह-भान से मरे हो?

तीसरे वत्स ने कहा : रोज मरते ही रहते हैं।

बाबा बोले : इसका मतलब यह है कि अभी पूरी तरह मरे नहीं हो। गोया अभी सर्व समर्पण नहीं हुए हो।

उसी वत्स ने कहा : वह तो तब होगा जब देह ही न रहे।

तब बाबा ने कहा : देह छोडेंगे तो दूसरी लेनी भी पडेगी; लेकिन देहभान छोड कर समर्पण होना है। क्या आप देह के अभिमान को छोड, सम्पूर्ण समर्पण बने हैं? जीते जी मर गये हैं वा मरते रहते हैं? देह के संबंध से और मन के संकल्पों से भी तुम देही (आत्मा स्वरूप) निश्चय हो? यह देह का अभिमान बिल्कुल ही टूट जायें, तब कहा जायेगा कि जीवन सर्व-समर्पण हैं। जो सर्व त्यागी सर्व समर्पण जीवन वाला होगा उसकी ही अवस्था सम्पूर्ण मानी जायेगी। वही अव्यक्त स्थिति प्राप्त कर सूक्ष्म वतन में बापदादा से मुलाकात कर सकेंगे।

सर्व समर्पण किसको कहा जाता है? जो श्वासों श्वास में अर्थात् निरंतर ईश्वरीय स्मृति में रहे। एक भी श्वास विस्मृति का न हो। जो ऐसे होंगे उनकी निशानी क्या है? हर्षितमुखता, सहनशीतला और गंभीरता।

श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा की परख

१. सदा भरपूर फखुर में रहने वाले अनुभव होंगे।

२. भाग्य की प्रोपर्टी की पर्सनालिटी दूर से ही अनुभव होगी।

३. उनकी दृष्टि से सर्व को रूहानी रोयल्टी अनुभव होंगी।

४. इस लौकिक दुनिया से न्यारे, उपराम और अलौकिक अनुभव होंगे।

५. चुम्बक की तरह आकर्षित करेंगे। देखने वाले हर्षित हो जायेंगे।

६. उनकी उपस्थिति से, श्रेष्ठ वृत्ति से - सुख, शांति, खुशी और पवित्रता का वायुमंडल अनुभव होगा।

७. अप्राप्त आत्मायें प्राप्ति का अनुभव करेंगी।

८. नाउम्मिदों के अंधकार के बीच शुभ आशा का दीपक जगायेंगी।

९. दिलशिकस्त आत्माओं को आंतरिक खुशी की अनुभूति होगी।

ऐसे भाग्यवान बने हो? तन पुराना, साधारण है लेकिन आप आत्मायें महान और विशेष हो। आप जैसी श्रेष्ठ भाग्य की लकीर किसी की भी नहीं हो सकती। चाहे कितनी भी धनवान, विद्वान, सत्तावान या विज्ञान की शक्ति से संपन्न हो- आप के आगे अंदर खाली महेसूस करेंगे। आप अंदर से भरपूर हैं, बाहर से साधारण हैं। चलते-फिरते सभी के संपर्क में आते यह जरूर अनुभव कराओ। अपनी उडती कला द्वारा औरों को भी उडाओ - अपनी दृष्टि से, वृत्ति से, शुभ भाव और शुभ भावना से। समझा?

"मनमनाभव " का गुह्य अर्थ

आप वत्सों को तो "मनमनाभव,मध्याजी भव"- का मंत्र मिला हुआ है ना? मनमनाभव का अर्थ बहुत गुह्य है। विराट सृष्टि-ड्रामा सेकन्ड-सेकन्ड जिस रीति से और जैसे चलता है, उसी को देखते हुए मन की स्थिति ऐसे ही निश्चय और साक्षीपन की पटरी पर सीधी चलती रहे। जरा भी हिले नहीं, तब उस स्थिति को मनमनाभव स्थिति मानेंगे। तो क्या आप संकल्प से और वाणी से ऐसी अवस्था में ड्रामा की पटरी पर चल रहे हो या कभी-कभी रूक जाते हो? विश्व नाटक की नियति अर्थात् भावी में अटल निश्चय बने रहना ही ड्रामा की पटरी पर चलना हैं। क्या मन की स्थिति हिलती है और फिर उसे आप काबू करते हो? मुख से वाणी कटु हो जाये फिर पछताना पडता है? मन-वचन की स्थिति हिलने से दाग़ हो जाता है।

अच्छा, फिर भी एक बात तो अच्छी है। अब तक आप वत्स कुछ वाणी तक तो आये हो अर्थात् मुख से तो तुरंत कहते हो, "भावी - ड्रामा" परंतु अभी तक प्रेक्टीकल रीति इस स्थिति में नहीं आये हो।

चिनगारी

Don't get upset with people and situations because both are powerless without your reactions.

व्यक्ति और परिस्थिति से अपसेट(डिस्टर्ब) मत बनो। क्योंकि दोनों आपकी प्रतिक्रिया(रिएक्शन) के बिना शक्तिहिन हैं।

Only Quiet Mind and Peaceful life give Happiness.

शांत मन और शांति सभर जीवन ही सुखदायक है।

Fame is like a honye bee it has a song. and it has a sting too

कीर्ति मधुमक्खी जैसी है। उसका गुंजन मधुर लगता है। परंतु मधुरता के साथ दंश भी देती है।

Fame is illusionary. Wisdom gives up the company of Intoxicated person. That person misguided by the way and get down fall.

कीर्ति भ्रामक है। जब उसका नशा चढता है तब विवेक साथ छोड देता है और मनुष्य पथ भ्रष्ट बन दुर्गति को प्राप्त कर लेता है।

बहुत अच्छा प्रश्न - कुमारों की भट्ठी में (मधुबन)

प्रश्नः- बाबा को तो सब पता रहता है। एक तरफ कुछ आत्मायें ऐसी है जो काबिल(योग्य) नहीं हैं, फिर भी उनको अच्छा स्थान मिला हुआ है; दूसरी तरफ कुछ आत्मायें ऐसी है जिनमें सब योग्यतायें हैं, फिर भी उन्हें सही स्थान नहीं मिल रहा है। भगवान तो जानी जाननहार हैं, फिर ऐसा क्यों?

उत्तरः- "अच्छा और बुरा की परिभाषा आप किस रूप से दे रहे हैं? देखो, रामायण में मंथरा का केरेक्टर कैसा था?"सबने कहा,"नेगेटिव। उसने कैकेयी के कान भरे, राम को वनवास भेजा, इसलिये राजा दशरथ ने प्राण त्याग दिये।"

यह एक पहलू है। अभी दूसरे पहलू को सोचो। अगर राम वनवास नहीं जाते तो? तो असुरों का वध कैसे होता? अहिल्या, जटायू, रावण और ऋषि-मुनियों का उद्धार कैसे होता? शबरी को भक्ति का फल कैसे मिलता? दुष्टों का संहार और शिष्टों का उद्धार जो हुआ, किसके कारण? "मंथरा के कारण"। अब बताओ, मंथरा नेगेटिव रोल है या पोजिटिव?

ड्रामा में कुछ चीजें ऐसी हैं जो अभी समज में नहीं आतीं। ड्रामा एक बहुत लंबी चीज है, हमारी दृष्टि हद की है जो केवल दिवार तक दृष्टि जा सकती है। लेकिन दिवार के पिछे क्या है, हमें दिखाई नहीं देता। जो दिख रहा है, उतना ही सत्य नहीं है; उसके पार भी सत्य है। अच्छे व्यक्ति के साथ बुरा हो ही नहीं सकता और बुरे व्यक्ति के साथ अच्छा हो ही नहीं सकता। अभी उनका कुछ पुण्य का खाता है, इसलिये अच्छा पा रहे हैं या अच्छा मिल रहा है। वे अपने जमा पुण्य को बरबाद कर रहे हैं। जब उनका पुण्य का खाता शून्य हो जायेगा, उसके बाद उनके लिये सजा ही सजा है। अगर अच्छी आत्माओं के साथ बुरा हो रहा है, इसका कारण यह है कि उनका विकर्म का खाता रहा हुआ है, वो चुक्ता होने तक उनका बुरा होता है। उसके बाद तो उनकी मौज ही मौज है। वास्तव में उनके लिये कुछ भी बुरा नहीं है, विकर्म भस्म हो रहे हैं।

- भ्राता जगदीशभाईजी

दृढ प्रतिज्ञा करो कि....

मुझे ब्राह्मण परिवार के बीच संस्कार मिलन की रास करनी ही है। वह रास कब करेंगे? उसकी डेट फिस्क करो। क्योंकि सब अचानक ही होना है।

कैसा भी है, ब्राह्मण परिवार तो मेरा है ना? जैसे मेरा बाबा कहते हो वैसे मेरा परिवार भी है। एक दो के सहयोगी बन शुभ भावना, शुभ कामना की दृष्टि, वृत्ति और स्मृति रखने से यह रास होना कोई बडी बात नहीं। चेक करो कि मुझे ब्राह्मण परिवार के बीच संस्कार मिलन की रास करना आता है?

किसी भी रोंग बात को रोंग समझना अलग चीज है, समाना अलग चीज है, समाप्त करना और भी अलग चीज है। समाना आता है, समाप्त करना नहीं आता है। ज्ञान अर्थात् समझ। लेकिन समझदार उसको कहा जाता है, जिसको समझना भी आता हो, मिटाना भी आता हो, और परिवर्तन करना भी आता हो। मन और बुद्धि को व्यर्थ से बिल्कुल फ्री करो। स्वाहा करो। कैसा भी है, लेकिन क्षमा करो। व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ वाणी, व्यर्थ वृत्ति, व्यर्थ वायब्रेशन....स्वाहा। फिर देखो नेचरल योगी और नेचर में फरिश्ता बन ही जायेंगे।

कोई इन्सल्ट करे, घृणा, निंदा या अपकार करे, लेकिन आप की शुभ भावना मिट न जाये। आप प्रकृति को भी परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक हैं। कोई संस्कार वश आपको दुःख भी दे, चोट लगायें। तो क्या आप इन दुःख की बातों को सुख में परिवर्तन नहीं कर सकते हो?

ये समस्याएँ, ये बातें... सब माया के ही रोयल रूप हैं। इन रूपों में ही मायाजीत बनना है। ये पेपर्स हैं, इन्हें पास कर आगे नंबर लेना है। बात नहीं बदलेगी, सेन्टर या स्थान बदलने से कुछ भी नहीं होगा, आत्मायें नहीं बदलेंगी...। हमें बदलना है। समझा?

चाहे भले कोई गाली भी दे रहा हो, बुराई कर रहा हो। कमजोर आत्मा की कमजोरी को न देखो, स्मृति में रहे कि वैरायटी आत्मायें पार्ट बजा रही हैं। आत्मा के रूप में उनको वृत्ति में लाने से ही रूहानियत, शुभ भावना, पवित्र दृष्टि हो जाती है। अपने आप का टिचर बन ऐसी प्रेक्टीस करनी है।

पूरा लक्ष्य रखो कि हर आत्मा मुझे देख खुश रहे, हल्के रहे, बोझ खत्म हो जायें। संस्कार मिलाना यह है स्नेह का सबूत। यह नहीं सोचो कि संस्कार मिले तो संगठन हो। लेकिन संस्कार मिलने से ही संगठन मदबुत बन जाता है।

अपकारी भी उपकार, यह ज्ञानी तू आत्मा का कर्तव्य है। ज्ञानी तू आत्मा अर्थात् सर्व प्रति रहम और कल्याण की भावना। हर एक के प्रति स्नेह स्वरूप और डिस्टर्ब आत्मा को भी सहयोग दो।

बापदादा के दिल की यही आश है कि मेरा हर बच्चा फरिश्ते रूप में विश्व के आगे प्रत्यक्ष हो। यह तब होगा जब आप ज्वाला रूप बन पुराने संस्कारों की मन्सा तक समाप्त करेंगे। संगठन की शक्ति के बिना प्रत्यक्षता हो नहीं सकती। इसलिये एक-दो से एडजेस्ट करने की शक्ति बढाओ।

नई ईन्वेन्शन निकालो कि दृष्टि से सृष्टि बदल जाये।

आप बच्चों के पास सर्व खजाने हैं। हर एक आत्मा की कामना पूर्ण करनेवाले हो। प्रतिदिन समय समाप्ति का आने के कारण अब आत्माऐं कोई नया सहारा ढूँढ रही हैं। तो आप आत्माऐं ही नया सहारा देने के निमित्त बनी हुई हो।

दातापन के संस्कारवाले को सर्व तरफ से सहयोग स्वतः प्राप्त होता है। न सिर्फ आत्माओं द्वारा लेकिन प्रकृति भी समय प्रमाण सहयोगी बन जाती है। यह सूक्ष्म हिसाब है कि जो सदा दाता बनता है, उसे पुण्य का फल समय पर सहयोग और सफलता सहज प्राप्त होता है। इसलिये दातापन के संस्कार ईमर्ज रूप में रखो। पुण्य का खाता एक का दस गुणा फल देता है। तो सारे दिन में नोट करो - संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा, संबंध-संपर्क द्वारा पुण्यात्मा बन पुण्य का खाता कितना जमा किया? मन्सा सेवा भी पुण्य का खाता जमा करती है। वाणी द्वारा किसी कमजोर आत्मा को अपने श्रेष्ठ संग का रंग अनुभव कराना - इस विधि से पुण्य का खाता जमा कर सकते हो।

... जितनी दुनिया में हलचल होगी (प्रकृति और परमाणु युद्ध द्वारा हो रही है ना?) उतनी ही आप ब्राह्मणों की स्टेज अचल होगी। ब्राह्मणों के उपर परमात्म छत्रछाया है। स्वराज्य अधिकारी बन, बेफिकर बादशाह बन, अचल-अडोल सीट पर सेट रहो।

अभी तीव्रगति का कोई प्लैन बनाओ। दृष्टि दी और दृष्टि से सृष्टि बदल जाये। ऐसा होना है। लास्ट में आप के एक सेकन्ड की दृष्टि कमाल करेगी। ऐसी कोई नई इन्वेन्शन निकालो। इस योग-ज्वाला से ही विनाश ज्वाला फोर्स में आयेगी। योग से ही विकर्म विनाश होंगे। पाप-कर्मों का बोझ भस्म होगा।

सेवा से पुण्य का खाता अभी जमा कर रहे हो, परंतु पिछले जन्मों के संस्कारों के बोझ हैं। वह तो योग-ज्वाला से ही भस्म होगा। साधारण योग से नहीं। अभी योग तो लगाते हो लेकिन पाप भस्म होने का ज्वाला रूप नहीं है। पिछले कमजोर संस्कार भस्म नहीं हुए हैं। मरने के बाद फिर जिन्दा हो जाते हैं। (जैसे रावण का मस्तक काटने के बाद फिर जिंदा हो जाता है)।

संस्कार परिवर्तन से ही संसार परिवर्तन होगा। अभी संस्कारों की लीला चल रही है। संस्कार परिवर्तन नहीं है तो व्यर्थ संकल्प भी हैं, व्यर्थ समय भी है, व्यर्थ नुकसान भी है।

सेवा में सफलता का आधार - निमित्त भाव

सेवा में निमित्त भाव ही सेवा की सफलता का आधार है। निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी यह तीनों विशेषतायें निमित्त भाव से स्वतः ही आती हैं। निमित्त भाव ही नहीं तो अनेक प्रकार का मैं-पन सेवा को ढीला कर देता है। इसलिये न मैं, न मेरा। एक शब्द याद रखना कि मैं निमित्त हूँ। निमित्त बनने से ही नम्रचित्त, निःसंकल्प अवस्था में रह सकते हैं। निमित्त बनने से कोई भी अहंकार उत्पन्न नहीं होगा। मतभेद के चक्कर में भी नहीं आयेंगे।

अब विशेष पुरुषार्थ यही होना चाहिए कि वापिस घर जाना है।

इस स्मृति से स्वतः ही सर्व संबंध, प्रकृति के सर्व आकर्षण से उपराम अर्थात् साक्षी बन जायेंगे। साक्षी बनने से सहज ही बाप के साथी- बाप समान बन जायेंगे। कार्य करते भी यह अभ्यास करो कि मैं निराकार आत्मा इस साकार कर्मेन्द्रियों के आधार से कर्म करा रही हूँ। निराकारी स्थिति करावनहार स्थिति है, कर्मेन्द्रियाँ करनहार हैं।

स्वयं को ज्ञानमूर्त, यादमूर्त और साक्षात्कारमूर्त बनाओ। जो भी सामने आए, उसे मस्तक द्वारा मस्तक-मणि, नयनों द्वारा ज्वाला दिखाई दे और मुख द्वारा वरदानी बोल निकलते हुए दिखाई दे - तब प्रत्यक्षता होगी।

कब तक?

बापदादा का प्रश्न है, सबका लक्ष तो संपूर्ण और संपन्न बनने का है ना? अच्छा, कब तक? इस की डेट फिक्स करो। कितने साल चाहिए? बताओ। क्योंकि प्रकृति बाप से पूछती है कि कब तक विनाश करें? समय का माहोल भी देखो। विज्ञान ने भी विनाशकारी शस्त्र-सामग्री तैयार कर रखे हैं।

अब कमाल करो ब्राह्मण परिवार के आगे, विश्व के आगे एक्झाम्पल बनो- संपन्न और संपूर्ण। सर्व गुण, सर्व प्राप्तियाँ और सर्व शक्तियों से संपन्न - मन्सा, वाचा, कर्मणा, संबंध-संपर्क चारों में। जिसके भी सामने जायें, वह अनुभव करे कि यह मेरा है।

लास्ट पेपर - अंतिम परीक्षा

लास्ट पेपर का समय क्या मिलेगा? एक सेकन्ड। लास्ट पेपर का टाईम और पेपर दोनों फिक्स है। पेपर सुनाया ना - "नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप।" एक सेकन्ड में ओर्डर हुआ - नष्टोमोहा बन जाओ। अगर स्वरूप बनाने में अर्थात् युद्ध में समय गँवा दिया तो फेल हो जायेंगे।

फास्ट पुरुषार्थ की विधि है - प्रतिज्ञा। प्रतिज्ञा से अपने को प्रख्यात करो। स्वयं को और बाप को प्रत्यक्ष करो। समय मिला है, सभी सबजेक्ट्स में स्वयं को संपूर्ण (कम्पलिट) कर लेने का।

ब्रह्माबाबा के अंतिम क्षणों का समाचार

ब्रह्माबाबा ने बताया कि क्लास समाप्त होने के बाद वे सभी वत्सों को "अच्छा बच्चे, अब छुट्टी।" ऐसा कह कर कमरे में वापिस लौटे तो उन्हें हृदय-क्षेत्र में असामान्य दर्द का अनुभव हुआ। वे अपने कमरे में जाकर शैया के बाजू पर बैठे ही थे कि दर्द की मात्रा तेजी से बढती गई। कुछ क्षणों के लिये शरीर और आत्मा में एक संग्राम की-सी अंतिम स्थिति थी, मानो कि कर्मों का रहा हुआ थोडा सा हिसाब अब स्थायी रूप से विदा लेना चाहता था। दोनों में मल्ल युद्ध हो रहा था। परंतु फिर भी साक्षी की स्थिति बनी हुई थी। आत्मा पर देहाभिमान की परछाई नहीं

पडी। आत्मा हृदय में उत्पन्न होनेवाली पीडा को अपने नियंत्रण में रखे हुए थी। कुछ ही क्षणों बाद ऐसा आभास हुआ कि चेतन आत्मा ने शरीर का एहसास छोडना शुरू किया है। मानो पांव के पंजे से लेकर चेतनता बडी तीव्र गति से स्वयं को समेट रही थी और भ्रुकुटि की और लपक रही थी। वह आत्मा जो उडता पंछी है, शरीर छोड कर अव्यक्त धाम की वासी हुई। जैसे मक्खन से सहज ही बाल निकल आता है, वैसे ही आत्मा देहरूपी कलेवर को छोड शिवबाबा के पास आ पहुँची। इस प्रकार देह की अंतिम परिक्षा जो इस दुनिया में हर एक को पार करनी होती है, वह भी पार हुई और इस प्रकार कर्म बंधन तथा देह-बंधन समाप्त हुआ।

बाबा ने कहा, "वत्सो, मैं कोई आपसे दूर नहीं हुआ बल्कि पहले शरीर होने के कारण जो आप सबसे मिलने की बाधा थी, वह समाप्त हो गयी। अब तो आप जब भी चाहें, जहाँ भी चाहें और जितने समय के लिये चाहें, बुद्धि योग-बल द्वारा मुझसे मिल सकते हैं। मैं तो बेहद विश्व की सेवा पर उपस्थित हुआ हूँ और आप सब लोगों के लिये सत्युग की स्थापना की रफ्तार तेज करने गया हूँ। पहले भी जब मैं शरीर में था तब आप बच्चे देह में होते हुए भी मिलते तो बुद्धि योग के बल से ही थे। और अब भी उसी रीति से मिल कर उससे भी अधिक अनुभव कर सकते हैं। तो अब अव्यक्त को व्यक्त में लाने के बजाय आप भी अव्यक्त स्थिति में स्थित हो कर अव्यक्त मिलन मनाने का अभ्यास करो। बाबा आपके साथ है। साथ कोई छुटा नहीं है। बल्कि बाबा परमधाम का दरवाजा खोलने की तैयारी करने गये है।"

बाबा बुला रहे हैं, बच्चों वतन में आओ,

अब मुझ को ना बुलाओ, तुम मेरे पास आओ....

ऐसी स्वयं की पेहचान बनाओ....

बापदादा सभी बच्चों की विशेष दो बातें देख रहे हैं। १. ऑनेस्ट - ईमानदार कहाँ तक बने हैं? २. होलीएस्ट - परम पवित्र कहाँ तक बने हैं?

: जितना ऑनेस्ट होगा उतना ही होलीएस्ट होगा। सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना यह प्युरिटी की हाइएस्ट स्टेज नहीं है, लेकिन प्युरिटी अर्थात् सच्चाई। बाप

से सच्चा बनना। ऐसी सच्ची दिलवाले बाप के दिलदख्त नशीन हैं और राज्य तख्त नशीन भी हैं।

: जो ईमानदार होगा वह बाप से प्राप्त खजानों को बाप के डायरेक्शन बिना किसी भी कार्य में नहीं लगावे। अगर मनमत या परमत प्रमाण समय, संकल्प, श्वास, वाणी या कर्म व्यर्थ गवांते हैं, परचिंतन करते हैं, अभिमान में आ जाते हैं उसको ऑनेस्ट वा ईमानदार नहीं कहेंगे। यह सब खजानें बापदादा ने विश्व कल्याण अर्थ दिये हैं।

: सदा सर्व प्रति शुभ भावना,आत्मीय दृष्टि-वृत्ति और रहम की भावना रहेगी।

: संकल्प, बोल और कर्म द्वारा सदा निमित्त भाव और निर्माण होंगे।

: हर संकल्प में समर्थ स्थिति का अनुभव होगा। हर घडी बाप के साथ और सहयोग के हाथ का अनुभव होगा।

: हर कदम में चढती कला का अनुभव होगा।

: बाप जो हैं, जैसे हैं - बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं, वैसे बच्चे भी जो हैं, जैसे हैं वैसे ही बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करें।

: किसी भी व्यक्ति वा बातों के आधार पर फाउन्डेशन न हो। पराधीन या परवश न हो। अनुभव और प्राप्ति के आधार पर फाउन्डेशन हो।

पुरूषार्थ का अंतिम लक्ष्य

वह है अव्यक्त फरिश्ता हो कर रहना। व्यक्त और अव्यक्त में क्या अंतर देखते है? व्यक्त पांच तत्वों के कार्ब में हैं और अव्यक्त, लाइट के कार्ब में है। जैसे चारों और फैली सूर्य की किरणों की लाइट के बीच में सूर्य का रूप दिखाई देता है,इसी प्रकार से मैं आत्मा ज्योतिरूप- कार्ब में हूँ। मेरे चारों और शांति, शक्ति, प्रेम आनंद की किरणें - लाइट ही लाइट फैल रही हैं। ऐसा नोलेजरूपी दर्पण में स्पष्ट दिखाई दे और अनुभव भी हो। चलते फिरते और बात करते, ऐसे मेहसूस हो कि मैं लाइटरूप-फरिश्ता चल रहा हूँ। तब ही आप लोगों की स्मृति और स्थिति का

प्रभाव औरों पर पडेगा।

आप सबकी यह स्मृति बढनी चाहिये कि मैं अवतरित हुई हूँ। मैं मरजीवा बन रही हूँ। अभी मैं ब्राह्मण हूँ फिर देवता बनूँगी। यह साकारी स्टेज है अभी आप लोगों की स्टेज आकारी फरिश्ते पन की चाहिये। क्योकिं आकारी से फिर निराकारी ज्योति बिंदु स्वरूप सहज बनेंगे। जैसे ब्रह्माबाप भी साकारी से आकारी बने, आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे।

अब आप लोगों को भी अव्यक्त वतनवासी स्टेज तक पहुँचना है तभी तो साथ चल सकेंगे। इससे ही साक्षात्कार होंगे। अब ज्वालामुखी स्वरूप बनने का समय है। अब आपका गोपीपन का पार्ट समाप्त हुआ। जैसे साकार ब्रह्माबाप द्वारा डबल लाइट-अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप का अनुभव होता था वैसे ही फिर आपके द्वारा सबको अनुभव होगा। साकार ने भी गुप्त पुरूषार्थ किया। इसी प्रकार आप लोगों को भी यह गुप्त मेहनत करनी है।

लाइट स्वरूप की स्मृति का बार बार अभ्यास करने से हिसाब-किताब चूक्तु करने में भी लाइट रूप हो जायेंगे।

मम्मा की सोगाद

हमने पूछा, मम्मा हमारे संगठन के पुरूषार्थ में तेजी कब आयेगी? मम्मा ने कहा, आप लोगों का अटेन्शन कम है। बहुतों के अंदर चलता है कि समय आयेगा तो हम तैयार हो जायेंगे। आप समय का इंतजार करते हो लेकिन बाबा ने कई बार ईशारा दिया है कि आप घडियाँ हो, आप समय को नजदीक लानेवाले हो। आप सबका सब तरफ से जब एक ही आवाज आयेगा कि परिवर्तन करना ही है और अब घर जाना ही है। तब आप देखेंगे सबका एक संकल्प सबकी अवस्था में कितना परिवर्तन लाता है।

चारों तरफ से बच्चों के अंदर उपराम- घर चलने की भावना जब एकदम पक्की हो जायेगी तब विनाश का कार्य शुरू हो जायेगा। आज के दिन मम्मा की सोगाद है कि उपराम बनो और घर चलने की तैयारी करो।

बापदादा क्या देखने चाहते हैं?

हर बच्चा तीव्र पुरूषार्थी हो। तीव्र पुरूषार्थी के लक्षण विशेष दो हैं -

१. नष्टोमोहाः- देहभान और देहअभिमान तथा संबन्ध के लगाव से मुक्त।

२. एवररेडीः- मन, वचन, कर्म, संबंध-संपर्क में समय का ओर्डर हो अचानक तो एवररेडी। सदा तैयार।

तीन विधियाँ - खजानों को जमा करने की

१. एक है - स्वयम् के पुरूषार्थ से प्रारब्ध का खजाना जमा करना। अर्थात् प्राप्तियों का खजाना जमा करना।

२. दूसरा है - संतुष्ट रहना और सर्व को संतुष्ट करना। इस में पुण्य का खाता जमा होता है।

३. तीसरा है - सदा सेवा में अथक, निःस्वार्थ और बडी दिल से सेवा करना। इससे जिनकी सेवा करते हैं, उनसे स्वतः ही दुआयें मिलती हैं।

चेक करो पुरुषार्थ, पुण्य और दुआओं का तीनों खाते जमा हैं? क्योंकि अचानक कोई भी पेपर आ सकता है।

प्रभु परिवार और पालना

अभी इसी संगमयुग में प्रभु परिवार में आना अर्थात् जन्म जन्मान्तर के लिये तकदीर की लकीर श्रेष्ठ बन जाना। प्रभु परिवार के बने और सदा के लिये सर्व प्राप्तिओं के भण्डार भरपूर हो गये। प्रकृति सदाकाल के लिये रिगार्ड देती रहेगी। प्रभु परिवार का अभी भी सर्व आत्माओं को स्नेह है। उसी स्नेह के आधार पर अभी भी गायन और पूजन करते रहते हैं। प्रभु परिवार के चरित्रों का अभी भी कितना बडा यादगार शास्त्र भागवत प्यार से सुनते और सुनाते रहते हैं। प्रभु परिवार का शिक्षक और गोडली स्टुडन्ट लाइफ का पढाई का यादगार शास्त्र गीता कितनी पवित्रता से विधिपूर्वक सुनते और सुनाते हैं। प्रभु परिवार बाप के दिलतख्तनशीन बनते और ऐसा तख्त सिवाय प्रभु परिवार के और किसी को भी प्राप्त हो नहीं सकता।

सिर्फ मेसेन्जर्स नहीं, अब पालनहार बनना है।

मेसेज तो बहुत दिया, और अभी और भी देनेवाले तैयार हो गये हैं। अभी चाहिये पालनावाले। जो विशेष निमित्त हैं, उन्हों का कार्य अभी हर सेकन्ड बाप की पालना में रहना और सर्व को बाप की पालना देना है। पालना का अर्थ है- उनको शक्तिशाली बनाना। और उमंग-उत्साह में लाना। वाणी की शक्ति की अनुभूति हो रही है लेकिन यहाँ ईश्वरीय शक्ति है, ईश्वर की पालना है - यह अनुभव अब कराओ। समझा?

आप रचना बहुत जल्दी रच लेते हो, अर्थात् निमित्त बनते हो। लेकिन प्रेम और पालना द्वारा उन आत्माओं को अविनाशी वर्से के अधिकारी बनाना- इसमें बहुत कम योग्य आत्मायें हैं। परिवार का अर्थ ही है प्रेम और पालना की अनुभूति कराना। जैसे बाप के लिये सब के मुख से एक ही आवाज निकलती है- "मेरा बाबा" ऐसे आप श्रेष्ठ आत्मा के प्रति हर एक को मेरे पन की भासना आये।

बाप ने देखा है कि परिवार में साथ निभाना, संस्कार मिलाना, हर एक को कल्याण की भावना से देखना - इसमें कई बच्चे यथा शक्ति बन जाते हैं। जो परिवार के निश्चय में नोलेजफुल हो कर सदा बाप समान साक्षीपन की स्थिति में रहते हैं, वही नंबरवन डिविझन में आते हैं। बाप ने स्थापना के समय 350-400 को इकट्ठा संभाला है। उतना तो अभी किसी का इकट्ठा रहनेवाला परिवार नहीं हैं।

भाव-स्वभाव है लेकिन भाव-स्वभाव प्यार को खतम नहीं करे, संबंध को खत्म नहीं करे, कार्य को सफल कम करे- यह राइट नहीं। कौन सा परिवार है? प्रभु परिवार। इकमें कोई भी कारण से प्यार की कमी नहीं होनी चाहिये। ऐसे हैं? प्यार अर्थात् शुभ भावना। कैसा भी है, परमात्म परिवार है। समझा?

प्रभु परिवार को चलाने की विधि

कैसी भी अवगुणधारी, पतित वा पुरूषार्थ हीन आत्मा हो - ऐसी आत्माओं के प्रति विश्व कल्याणकारी, बेहद की दाता आत्मा, उन आत्माओं की बुराई वा कमजोरियों को सदा कल्याणकारी होने के नाते पहले क्षमा करेगी। उसके बाद ऐसी

आत्मा के वास्तविक-मूल स्वरूप और गुणों को सामने रखते हुए महिमा करेंगे - अर्थात् उनको अपनी महानता की स्मृति दिलायेंगे। "किसके बच्चे हो ?" किस कुल के हो? संगमयुग की विशेषता वा वरदानों की महिमा करेंगे। जिससे वह आत्मा निजी गुणों को सुनते हुए स्मृति और समर्थी में आकर कमजोरी वा बुराई को मिटाने की हिम्मत करेंगे। इस विधि से परिवार चलाना है। आप लोगों के मुख से सदैव हर आत्मा के प्रति शुभ बोल निकलने चाहिये, दिलशिकस्त बनानेवाले नहीं। शिक्षा भी देनी है तो पहले समर्थ बनाके दो। पहले धरनी पर हिंमत और उत्साह का हल चलाओ फिर बीज डालो तो सहज ही फल निकलेगा।

जितने ब्राह्मणों का आपके प्रति स्नेह सन्मान अर्थात् रिगार्ड होगा, दिलसे संतुष्ट होंगे उतना ही आप पूज्य बनेंगे। अभी आवश्यकता है रहमदिल बनने की। क्योंकि कई बच्चे कमजोर होने के कारण अपनी शक्ति से कोई बडी समस्या से पार नहीं हो सकते, तो आप सहयेगी बनो। हर एक के स्वभाव का राज जानकर राजी करो। उनकी नजरों को जान जाओ, फिर दुवा की दवा दो।

जब तक इस दैवी संगठन की एकरस स्थिति प्रख्यात नहीं होगी तब तक बापदादा की प्रत्यक्षता समीप नहीं आयेगी। हर एक ब्राह्मण की रिस्पोन्सीबिलिटी न सिर्फ अपने को एकरस बनाना है लेकिन सारे संगठन को एकरस स्थिति में स्थित कराने के लिये सहयोगी बनना है। ऐसे नहीं खुश हो जाना कि मैं अपने रूप से ठीक ही हूँ। जैसे स्थूल किले को मजबूत किया जाता है, जिससे कोई भी दुश्मन वार कर न सके। तो यह संगठन रूपी किले की मजबुती के लिये ३ बातों की आवश्यकता है। एक है स्नेह, दूसरा स्वच्छता और तीसरा है रूहानियत। स्नेह और स्वच्छता से प्रभावित तो हो जाते हैं लेकिन तीसरी बात रूहानियत की मुख्य है। जब संगठन में रूहानियत वा अलौकिकता प्रत्यक्ष दिखाई दे तब जयजयकार होगी।

सभी एक दो से कहाँ तक संतुष्ट हैं? इसका सर्टिफिकेट लेना होता है।

वर्तमान समय रहम की भावना से स्नेह की माला में सबको पिरोना, यही विशेष आत्माओं का कार्य हैं। समझा? अपने साथीयों को और सभी को शक्तियों का सहयोग दो। उनकी कमजोरी नहीं देखो। उनमें विशेषता वा शक्ति की कमी

है, वह भरते जाओ। आजकल जो निमित्त हैं, उन्हों को इस पालना के निमित्त बनने की आवश्यकता है। जिज्ञासु बढायें, सेवाकेन्द्र बढायें- यह तो कोमन है। स्वयं तो संतुष्ट रहना ही है लेकिन सर्व को संतुष्ट करना भी है। कोई परवश हो के कुछ कर लेते हैं तो उन्हों को कुछ शिक्षा, कुछ क्षमा, कुछ रहम और कुछ आत्मिक स्नेह देने की आवश्यकता है। संदेश देने का कार्य तो बहुत किया, कर रहे हैं, करते रहेंगे। अब सहयोग और स्नेह देने की रूप रेखा को स्टेज पर लाओ।

हर एक की राय को रिगार्ड देना है। कोई की राय को ठुकराना गोया अपने आप को ठुकराना है। पहले से ही कट करना नहीं चाहिये। "यह रोंग है, यह हो नहीं सकता।"यह उसकी राय का डिसरिगार्ड करते हो। पहले रिगार्ड दो तभी संगठन को मजबूत बना सकेंगे।

अंत:वाहक शरीर द्वारा सेवा

अंत के समय कर्मातीत अवस्था की स्थिति से एक सेकन्ड में कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हो। उस समय आप स्थूल स्वरूप के भान से परे रहते हो। यही सूक्ष्म शरीर द्वारा उडती कला की फाईनल स्टेज है। लोगों को आपकी आंतरिक स्टेज-फरिश्तापन का साक्षात्कार हो। लाइट हाउस, माइट हाउस, दोनों ही स्वरूप इमर्ज रूप में हो। शक्तिस्वरूप अर्थात् अलंकारी और संहारी। लाइट माना बंधन मुक्त-बेफिक्र बादशाह, निश्चिंत और निश्चय बुद्धि।

रूहानी रूप, रूहानी दृष्टि, कल्याणकारी वृत्ति और रहम भाव द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करना है। भाषण द्वारा भाषा से भी परे स्थिति में ले जाने का अनुभव कराओ। भाषण की तैयारी ज्यादा करते हैं लेकिन रूहानी आकर्षण स्वरूप की स्मृति में रहने की तैयारी पर एटेन्शन कम देते हैं।

- खुद संतुष्ट मणियाँ हैं तो औरों को भी संतुष्ट करेंगे।

- टीचर का पेपर कदम कदम पर होता है। आपका हर कदम वा कर्म विश्व के लिये एक एक्झाम्पल बन कर रहे।

मन्सा सेवा का जादू

चाहे कोई आत्मा कितनी भी दूर हो- मन्सा शाक्ति द्वारा उस आत्मा को प्राप्ति की, शक्ति की अनुभूति करा सकते हैं। व्यर्थ भाव परिवर्तन कर समर्थ भाव बना सकते हैं। किसी भी आत्मा के स्वभाव को भी बदल सकते हैं। हिम्मतहीन आत्मा को हिम्मतवान बना सकते हो। वर्तमान समय के प्रमाण मन्सा सेवा अति आवश्यक है।

- अभी तो वाणी द्वारा बदलने का कार्य चल रहा है। अभी वृत्ति द्वारा वृत्तियाँ बदलें, संकल्प द्वारा संकल्प बदल जायें, स्वभाव बदल जायें, यह रिसर्च तो शुरू भी नहीं की है। यह सूक्ष्म सेवा स्वतः ही कमजोरियों से पार कर देगी। यह मन्सा शक्ति की विधि से सिद्धि स्वरूप बन जायेंगे।

- आप आलमाईटी सत्ता की महान आत्माएँ हो। आपके पास शुद्ध संकल्पों की, शुभभावनाओं की शक्ति है, जिसके आधार पर बाप से संबंध जोड, किसी भी आत्मा को मालामाल बना सकते हो, जितना चाहो उतना ऊँचा उठा सकते हो। सिर्फ अपने सत्ता के वेल्यू को यथार्थ रीति से यूज करो। अब छोटी छोटी बातों में अलबेले पन के एश-आराम में, वा व्यर्थ सोचने वा बोलने में अपनी मन्सा शक्ति को मिसयूज नहीं करो।

- जैसे शुरू शुरू में साक्षात्कार का पार्ट हुआ, वह अन्त में भी रीपिट होना है। इसलिये अपनी मन्सा शक्ति को, मन्सा सेवा को बढाओ। उस समय भाषण कोई नहीं सुनेगा, कोर्स कोई नहीं करेगा। हालतें बडी गंभीर होंगी। मन्सा सकाश देने की सेवा ही करनी पडेगी। इसलिये अभी इसका अभ्यास करो। अन्तर्मुखी होकर बीच बीच में पाँच मिनिट निकालो।

- बहुत नाजुक समय आना ही है। ऐसे समय उडती कला द्वारा फरिश्ता बन चारों ओर चक्कर लगाते, शान्ति-खुशी-शक्ति और संतुष्टता की प्राप्ति का अनुभव कराना है। अंतःवाहक अर्थात् अन्तिम पावरफुल स्थिति आपका अन्तिम वाहन बनेगा। फिर देखो, गवर्नमेन्ट को भी साक्षात्कार होगा- यही है, यही है, यही है।

- अमृतवेले को पावरफुल बनाओ, जिससे मन्सा सेवा का अनुभव बढा सकेंगे। अभी तो स्थूल लाईट के प्रभाव से आते है, फिर उस समय आप आत्मा के लाईट का प्रभाव होगा। नजर से निहाल करना पडेगा। अभी निर्विघ्न वायुमंडल बनाओ।

मन्सा सेवा की विधि

- अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा किसी भी स्थान पर रहते हुए अनेक आत्माओं की सेवा करनी है। इस की विधि है - लाइट हाउस माइट हाउस बनना। लाइट हाउस एक ही स्थान पर स्थित होते दूर दूर की सेवा करते हैं। ऐसे आप एक स्थान पर होते अनेकों की सेवा अर्थ निमित्त बनो। सदा मन-बुद्धि को व्यर्थ सोचने से मुक्त लाइट-माइट संपन्न बनाना है।

- जैसे ऊँची टावर से लाइट फैलाते हैं, ऐसे आप बच्चे भी अपनी ऊँची स्थिति अथवा ऊँचे स्थान पर बैठ कम से कम ४ घण्टे विश्व को लाइट और माइट दो। जैसे सूर्य भी विश्व में रोशनी तब दे सकता है, जब ऊँचे स्थान पर है। तो साकार सृष्टि को सकाश देने के लिये ऊँचे स्थान वा स्थिति निवासी बनो। जैसे सूर्य अपने किरणों के बल से अंधकार को दूर कर रोशनी में लाता है और कई चीजों को परिवर्तन करता है, ऐसे ही आप मास्टर ज्ञान सूर्य अपने प्राप्त हुए सुख-शांति की किरणों से, सकाश से, औरों को दुःख, अशांति से मुक्त करो। शक्तिशाली वृत्ति से वायुमंडल को परिवर्तन करो।

- जैसे छोटा सा फायर फ्लाई दूर से ही अपनी रोशनी का अनुभव कराता है। ऐसे आप शांति के अवतार बन शांतिकुंड का अनुभव कराओ। "मैं मास्टर शांति दाता हूँ। मास्टर शक्ति दाता हूँ।" इसी स्मृति से अनेक आत्माओं को वायब्रेशन देते रहो।

आपका स्वमान क्या है? - विश्व कल्याणकारी। जिन्हों को आप सकाश देंगे वही आपके भक्त बनेंगे।

जैसे साइन्स की शक्ति धरनी की आकर्षण से परे कर लेती है, ऐसे सायलेन्स की शक्ति सब हद की आकर्षणों से दूर ले जाती है। स्थूल कर्मेन्द्रियजीत बनना, यह फिर भी सहज है लेकिन मन, बुद्धि, संस्कार-इन सूक्ष्म शक्तियों पर विजयी बनना - यह सूक्ष्म अभ्यास है। जिस समय जो संकल्प इमर्ज करने चाहे वही संकल्प वही संस्कार सहज अपना सकें। इसको कहते हैं सम्पूर्ण विजयी।

अपने आप को चेक करो

हमारे संकल्प, बोल में रूहानियत है? रूहानि संकल्प मन्सा सेवा के लिये निमित्त बनते हैं। वे अपने में शक्ति भरते हैं, साथ साथ दूसरों को भी शक्ति देते हैं। रूहानी बोल स्वयं को और दूसरों को भी सुख का अनुभव कराते हैं, शान्ति का अनुभव कराते हैं। परिवर्तन लाकर, आगे बढने का आधार बन जाता है। रूहानी बोल बोलने वाला वरदाता बन जाता है। रूहानी कर्म सहज स्वयं को कर्मयोगी स्थिति का अनुभव कराते हैं, साथ साथ दूसरों को भी कर्मयोगी बनाने का सैम्पल बन जाते हैं।....रूहानियत का बीज है पवित्रता। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, हर संकल्प हर बोल, हर कर्म में पवित्रता हो। स्वप्न तक भी पवित्रता भंग न हो। यह है बाप समान रूहानी स्थिति जो संपर्क-संबंध वालों को अनुभव हो। सदा मन में गीत गुंजता रहे -

दिल का अब संकल्प यही है, बाबा जैसा बनना है.....

सायलेन्स की शक्ति की कमाल

बाबा - ज्वाला रूप बनने का मुख्य और सहज पुरूषार्थ कौन सा है?

उत्तर - मेरा तो एक शिवबाबा.....

बाबा - यह स्मृति सदा रहे, इसके लिये भी कौनसा पुरूषार्थ है?

उत्तर : न्यारापन।

बाबा - न्यारापन भी किससे आयेगा? कौनसी धुन में रहने से?

धुन यही रहे कि अब वापिस घर जाना है। जाना है अर्थात् उपराम। जब अपने निराकारी देश जाना है तो वैसा अपना वेश (पुरुषार्थ) बनाना होता हैं। इस

स्मृति से स्वतः ही सर्व संबंध, सर्व प्रकृति के आकर्षण से उपराम अर्थात् साक्षी बन जायेंगे व बाप समान बन जायेंगे।

आधारमूर्त आत्माओं का संकल्प ही विनाशअर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रेरणा का आधार है। जैसे यज्ञ रचने के निमित्त ब्रह्माबाप के साथ ब्राह्मण बने तो यज्ञ से प्रज्जवलित हुई यह जो विनाश ज्वाला है, इसके लिये भी जब तक ज्वाला रूप नहीं बनते तब तक विनाश ज्वाला भी संपूर्ण ज्वालारूप नहीं लेती है। यह भडकती है फिर शितल हो जाती है। कारण? क्योकिं ज्वालामूर्त और प्रेरक आत्माएँ अभी स्वयं ही सदा ज्वालारूप नहीं बनी है। ज्वालारूप बनने का दृढ संकल्प स्मृति में नहीं रहता है। अभी इस दृढ संकल्प की तीली लगाओ तब विनाश ज्वाला भडकेगी। संगठन रूपका ज्वालारूप विश्वके विनाश का कार्य संपन्न करेगा।

अपनी लास्ट स्टेज - सर्व कर्मबन्धनों से मुक्त कर्मातीत अवस्था, न्यारे और प्यारेपन का बेलेन्स सदा ठीक रहे। ऐसी निराकारी स्टेज संगठन रूप में बनाओ तब विनाश के नजारे और साथ साथ नई दुनिया के नजारे स्पष्ट दिखाई देंगे।

धन्य है वो घडी.....

ब्राह्मण जीवन में सब से पहले तकदीर खुलने का श्रेष्ठ समय वा श्रेष्ठ घडी वो ही है, जब बच्चों ने जाना और माना -"मेरा बाबा"। वह घडी ही सारे कल्प में श्रेष्ठ और सुहावनी है जिसमें अनाथ से सनाथ बने, क्या से क्या बने! बाप से बिछडे हुए फिर से मिले। अप्राप्त आत्मा प्राप्ति के दाता के बने। वह पहली परिवर्तन की घडी, तकदीर जगने की घडी कितनी श्रेष्ठ और महान है! जब आप बाप के बन गये। मेरा सो तेरा हो गया। खुशी के पंख लग गये। फर्श से अर्श पर उडने लगे। पत्थर से सच्चा हीरा बन गये। अनेक चक्करों से छूट स्वदर्शन चक्रधारी बन गये। वह घडी याद है? वह बृहस्पति के दशा की घडी, जिसमें तन, मन, धन, जन-सर्व प्राप्ति की तकदीर भरी बुई है। तीसरा नेत्र खुला और बाप को देखा, धन्य है वो घडी। अपने संगमयुगी ब्राह्मण जीवन की उस पहली घडी को अमृतवेले सदैव याद करना, तो सारा दिन खुशी के खजाने से भरपूर रहेंगे।

अति हो तब तो अंत हो

अभी समय नजदीक आ रहा है, इसलिये कमजोरी छिप नहीं सकती।राजा बननेवाला, प्रजापद वाले, कम पद पाने वाले, सेवाधारी बनने वाले, सब अभी प्रत्यक्ष होंगे। जैसे समाप्ति के समय सब बिमारी निकलती है, वैसे समाप्ति का समय होने के कारण हर एक की वैरायटी कमजोरियाँ प्रत्यक्ष होंगी। अति हो तब अंत हो।

आप वरदानी हो तो आप का हर संकल्प, बोल हर आत्मा के प्रति कल्याणी हो। लहरें तो और भी आयेंगी। एक खतम होगी तो दूसरी आयेगी। यह सब मनोरंजन के बाइप्लोट्स हैं। वैरायटी पद भी स्पष्ट हो रहे हैं। साक्षात्कार करा रहे हैं।

एक तरफ नये नये बच्चे रेस में आगे दिखाई देंगे। दूसरे तरफ थकनेवाले, रूकनेवाले भी प्रत्यक्ष होंगे। तीसरे तरफ जो बहुत समय से कमजोरियाँ रही हुई हैं, वह भी प्रत्यक्ष होंगी। नथींग न्यू। लेकिन रहम की दृष्टि और कल्याणकारी भावना दोनों साथ हो।

बापदादा की बच्चों प्रति आश

अभी समय दिन प्रतिदिन नाजुक आना ही है। ऐसे समय पर अभी ज्वालामुखी योग चाहिये अर्थात् लाइट-माइट शक्तिशाली स्वरूप। समय प्रमाण अभी दुःख, अशांति, हलचल बढनी ही है। इसलिये अपने दुःखी, परंशान आत्माओं को विशेष ज्वालामुखी योग द्वारा शक्तियाँ देने की आवश्यकता पडेगी। सारा विश्व जब एक परिवार है तो अशांत आत्माओं को कुछ तो अंचलि देंगे ना?

संगम का समय अचानक समाप्त होना है। एक समय, दूसरा संकल्प-दोनों पर हर घडी अटेन्शन। बापदादा की हर बच्चे प्रति शुभ भावना है कि आपके चेहरे से फरिश्ता रूप दिखाई दे। इसलिये अपने लाइट-माइट स्वरूप से व्यर्थ को जलाओ। चलते-फिरते स्वमान की स्मृति में रहो।

अभी पुराने संस्कारों को मारते हो, लेकिन जलाते नहीं हो। मारने के बाद फिर भी वे कभी कभी जाग जाते हैं। जैसे रावण को सिर्फ मारा नहीं, जलाया भी। ऐसे आप भी अपने भीतर के पुराने संस्कार-स्वभाव रूपी रावण को समाप्त करो फिर फरिश्ता रूप द्वारा सकाश देने की सेवा कर सकेंगे।

UNIVERSAL PEACE HALL